



प्रो. चंद्र चार त्रिपाठी

एक चौकाने वाली सच्चाई यह की भारत में केवल 100 में से सिर्फ 5 युवाओं को ही औपचारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण मिलता है. बाकी 95 छात्र अन्य डिग्री जैसे आर्ट्स, कॉमर्स, कृषि, विज्ञान आदि डिग्री के पीछे अपना अमूल्य समय व्यतीत करते हैं. वे किताबी ज्ञान लेकर 8 से 10% सरकारी नौकरी की दौड़ में पिछड़ जाते हैं और अंत में हार मान कर बेरोजगार के श्रेणी में आ जाते हैं. बहुत सारे सर्वे के अनुसार आधे से ज्यादा युवा रोजगार योग्य ही नहीं माने जाते! यह कैसा विरोधाभास है कि देश में 69% नौकरियां संगठित क्षेत्र में हैं, पर हमारे पढ़े-लिखे युवा तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल नहीं प्राप्त करने के कारण उन्हें नहीं पा सकते!

जब डिग्री मिले और नौकरी भी

मेरे पास बीए है, पर नौकरी नहीं - यह कहानी अब बदलने वाली है!

राजकुमार ने जब इतिहास में बीए किया, तो सोचा था शिक्षक बनेंगे. लेकिन डिग्री के बाद मिली बेरोजगारी. ऐसे ही लाखों राजकुमार हर साल कॉलेज से निकलते हैं - डिग्री हाथ में, पर जेब खाली. लेकिन अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने एक नया रास्ता दिखाया है, जिसमें पॉलीटेक्निक एवं तकनीकी शिक्षण संस्थान बन रहे हैं गैम चेंजर.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पॉलीटेक्निक एवं तकनीकी शिक्षा के माध्यम से विभिन्न व्यावसायिक कोर्सों के माध्यम से वह जादुई चाबी युवाओं को दे सकती है जो खोल देगी रोजगार के दरवाजे.

पॉलीटेक्निक संस्थान सिर्फ डिप्लोमा देने वाले संस्थान नहीं, बल्कि कौशल की खदान हैं. देश भर के 3,500 से ज्यादा पॉलीटेक्निक में 15 लाख युवा पढ़ रहे हैं. दिलचस्प बात यह है कि इन डिप्लोमा धारकों में 95% को नौकरी मिल जाती है! अब कल्पना कीजिए, अगर यही कौशल प्रशिक्षण बीए, बीकॉम, बीएससी एग्री. और बीएससी करने वाले छात्रों को भी मिले तो क्या होगा? यही है एनईपी 2020 का सपना!

शिक्षा नीति ने तीन स्मार्ट रास्ते सुझाए हैं

पहला रास्ता: जब आप बीए कर रहे हों, साथ-साथ दूर गाइड, डिजिटल मार्केटिंग या म्यूजियम प्रबंधन से संबंधित कोर्सेज कोर्स भी सीख सकते हैं.

दूसरा रास्ता: अपनी डिग्री पूरी करके अतिरिक्त कौशल डिप्लोमा सर्टिफिकेट क्रेडिट कोर्स हासिल कर सकते हैं.

तीसरा रास्ता: अगर कॉलेज में दाखिला नहीं मिला, तो पॉलीटेक्निक से सीधे कौशल कोर्स करके नौकरी पाएं.

देखिए कैसे बदलेगी आपके बच्चे की किस्मत!

इतिहास पढ़ें, दूर गाइड बनें!

आपका बेटा या बेटा अगर इतिहास और पर्यटन में रुचि रखते हैं, तो सिर्फ किताबें रकने के बजाय अब वे सीख सकते हैं और हासिल कर सकते हैं व्यावसायिक कौशल. जिनके माध्यम से कुशल दूर गाइड बन सकते हैं, म्यूजियम को कैसे संचालें, विरासत स्थलों का प्रबंधन कैसे करें, ट्रेवल ब्लॉगिंग और डिजिटल मीडिया आदि से संबंधी कौशल आधारित दौरे से तीन क्रेडिट के सर्टिफिकेट कोर्स एनएसडीसी, सेक्टर स्किल काउंसिल

पॉलीटेक्निक एवं उच्च शिक्षा के तकनीकी शिक्षण संस्थान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार बदल रहे हैं भारतीय शिक्षा का नक्शा



यह सिर्फ सपना नहीं, हकीकत बनने वाला है!

आज का दौर एआई और डिजिटल फाइनेंस का है. अब वही युवा आगे बढ़ेगा जो सिर्फ डिग्री नहीं, बल्कि स्किल्स लेकर निकले. कौशल एवं व्यावसायिक कोर्स वह सीढ़ी है जो आपके बच्चे को किताबों की दुनिया से नौकरी की दुनिया तक ले जाएगी. यद रक्षित - अब डिग्री तो सबके पास है, पर स्किल किसी-किसी के पास! और स्किल ही असली संपत्ति है. तो अगली बार जब आपका बच्चा कॉलेज जाए, तो पूछिए - क्या तुम्हारे कॉलेज में पॉलीटेक्निक के साथ कोई कोर्स है? क्योंकि वही कोर्स बदल सकता है उसकी किस्मत!

से प्रमाणित स्किल ट्रेनिंग सेंटर्स से कर सकते हैं.

कल्पना कीजिए - आपका बच्चा बीए करते-करते प्रोफेशनल दूर गाइड का सर्टिफिकेट भी हासिल कर ले!

डिग्री भी, नौकरी को गारंटी भी!

बीकॉम के साथ बनें डिजिटल मार्केटिंग एक्सपर्ट!

वाणिज्य के छात्रों के लिए अब सिर्फ अकाउंट्स की बोरोरिज नहीं, बल्कि: सोशल मीडिया मार्केटिंग, ई-कॉमर्स बिजनेस, डिजिटल पेमेंट सिस्टम, अपना स्टार्टअप शुरू करने की ट्रेनिंग, भौतिकी के साथ मिले सोलर एनर्जी का ज्ञान!

विज्ञान के छात्रों को अब मिलेंगे, सौर ऊर्जा सिस्टम की ट्रेनिंग, डेटा साइंस और एआई की बेसिक्स, इलेक्ट्रिक वाहन टेक्नोलॉजी, लैब तकनीक और रिसर्च स्किल्स.

इस तरह के प्रयास से असली बदलाव की बहुत सारी प्रेरणाप्रद सफल कहानियों में से एक है. जयपुर की सफलता जहां 90% नौकरी को गारंटी!

जयपुर के पॉलीटेक्निक में एक प्रयोग हुआ. कला और वाणिज्य के छात्रों को शिल्प डिजाइन और ई-कॉमर्स की ट्रेनिंग दी गई. इसका नतीजा यह रहा कि दाखिले में 40% की बढ़ोतरी और 90% छात्रों को

नौकरी मिली. अब वहां के छात्र सिर्फ डिग्री नहीं, बल्कि अपना भविष्य पा रहे हैं. केरल ने पर्यावरण पर्यटन से 92% प्लेसमेंट संभव हो सका है - केरल में एक छोटे से पॉलीटेक्निक ने इको-टूरिज्म मॉड्यूल शुरू किया. मानविकी के छात्रों को सिखाया कि कैसे प्रकृति को बचाते हुए पर्यटन चलाएं. आज 92% छात्रों के पास नौकरी है - वह भी अच्छी सैलरी पर!

तमिलनाडु का तगड़ा कदम - 25,000 युवाओं को ईवी की ट्रेनिंग! इलेक्ट्रिक वाहन भविष्य हैं. तमिलनाडु ने यह समझा और 25,000 विज्ञान के छात्रों को ईवी तकनीक सिखाई. आज ये युवा टेस्ला और ओला इलेक्ट्रिक जैसी कंपनियों में काम कर रहे हैं!

गुजरात का जुगाड़ - 45% लड़कियां भी आगे! गुजरात के स्मार्ट पॉली मॉडल ने कमाल कर दिया. माइक्रो-क्रेडेंशियल्स के जरिए छोटे-छोटे सर्टिफिकेट देकर 45% महिला भागीदारी हासिल की. अब लड़कियां भी बिना डिप्लोमा तकनीकी कोर्स कर रही हैं!

भोपाल का एनआईटीटीटीआर बना है मार्गदर्शक - NITTR भोपाल इस क्रांति का कमांडर बना हुआ है. यहां से 3 लाख शिक्षकों को नई तकनीक की ट्रेनिंग AI, IoT, AR/VR, मैकेट्रॉनिक्स, आटोमेशन, रोबोटिक्स, सेमीकंडक्टर पैकेजिंग, यंत्र निर्माण आदि जैसी आधुनिक तकनीक में कोर्स ऑफर कर रहा है. हर साल पाठ्यक्रम अपडेट करने की व्यवस्था

कस्टमाइज्ड MOOC कोर्स - गांव-गांव तक शिक्षा पहुंचाने का प्रयास अपने ई प्रशिक्षण पोर्टल के माध्यम से कर रहा है. एनआईटीटीटीटीआर के निदेशक प्रो. चंद्र चार त्रिपाठी कहते हैं, हम सिर्फ पढ़ाना नहीं सिखा रहे, बल्कि रोजगार देना सिखा रहे हैं. उनका कहना है कि 2035 तक भारत सरकार का सपना है और विश्वास है कि 60% कॉलेजों में पॉलीटेक्निक एवं तकनीकी संस्थाओं की मदद से व्यावसायिक कोर्स का निर्माण कर आधे छात्रों को कौशल प्रशिक्षण की गारंटी. 10000 माइक्रो-क्रेडेंशियल्स - यानी छोटे-छोटे सर्टिफिकेट जो नौकरी दिलाएं के माध्यम से भारत को कौशल कैपिटल देश बना सकते हैं.

(लेखक राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल के निदेशक हैं)

कविता

काल भी हार गया जिस प्रण से हुए स्वतन्त्र तभी उस क्षण से

अजय मिश्रा

आज अगर हम हैं स्वतन्त्र तो, सुन लो इसका सब इतिहास,

एक दूसरे से उलझे हम पाने, मान प्रतिष्ठा, हास-परिहास,

कारण बनी रही बिडम्बना, हुए सभी हम उनके दास,

दोहन ही स्वभाव थे जिनके, लुटे पिये सदियों तक जिनसे,

हुई ग्लानि जब निज कर्मों से, जगा स्वाभिमान चेतन से,

त्यागी-तपस्वी वीर-ब्रती थे, देख-देख भारत जन पीड़ा, सभी मनस्वी बहुत दुखी थे,

मातृ भूमि पर बंधन कैसा, सब सनातीत तब झगड़ा कैसा, दिया मंत्र जब उनसे ऐसा,

उठती टीस वेदनाओं की, तब कटक सम हैं हीरक हार,

चिंगारी भड़की बन शोला, भार सभी हम आज रहेंगे, मातृभूमि आजाद करेंगे, लाख कंट स्वर यही पुकार,

दमन चक्र ऐसे चलते थे, सी-सी खूनी सोते फूटे थे,

हरी-हरी भारत भूमि पर, लाखों सर-धडकते पड़े थे,

काल भी हर गया जिस प्रण से, हुए स्वतन्त्र तभी उस क्षण से

सत्ता पर "आरूढ़" होकर भी

राजीव खंडेलवाल

होटल संस्कृति की शरण क्यों लेनी पड़ रही है?

आया-राम गया राम - वर्ष 1967 में हरियाणा के पलवल से "निर्दलीय" विधायक "गया लाल" ने मात्र 15 दिनों के भीतर कई बार अपनी निष्ठा बदली. पहले "कांग्रेस" को समर्थन दिया, फिर "संयुक्त विधायक दल" में शामिल हुए, वापस "कांग्रेस" लौटे और फिर "उसी दल" में चले गए. संयुक्त विधायक दल के नेता राव बीरेंद्र सिंह ने मीडिया के सामने व्यंग्यपूर्ण ढंग से कहा, "जो 'गया राम' थे, वो 'आया राम' हो गए". इसी से प्रसिद्ध मुहावरा "आया राम-गया राम" जन्मा, जो आज भी भारतीय राजनीति की अस्थिरता का प्रतीक बावजूद दल-बदल विरोधी कानून के बना हुआ है.

इस "आया राम, गया राम" की "चरम" स्थिति तब पहुंची, जब वर्ष 1979 में हरियाणा की भजन लाल की पूरी की पूरी जन्तु पार्टी सरकार ही एक झटके में "कांग्रेसी" हो गई, पर तब "होटल संस्कृति" जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी. आज पिछले 15-20 वर्षों से "तथ्याकथित स्वच्छ राजनीति" के दौर में यह "होटल संस्कृति" एक "स्थापित चलन" बन चुकी है, जिसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों ही शामिल हैं. दुर्भाग्यवश कोई भी पार्टी इस दोष से अछूती नहीं रहती है.

सत्ता को बनाये रखने के लिए स्थापित होती होटल संस्कृति - आज की राजनीति में "अविश्वास" की खाई इतनी गहरी हो गई है कि जनता का विश्वास (जनादेश) प्राप्त कर चुनाव जीतने के बाद भी विधायक या पार्षदों पर "नेतृत्व" का भरोसा नहीं रहता है. खासकर जब जीत (बहुमत) की संख्या का अंतर "बहुत कम" होता है अथवा एक पक्ष को "स्पष्ट बहुमत न मिलना" हो. नतीजा दल-बदल का "खेल" चालू हो जाता है और भारतीय राजनीति में दल-बदल की परंपरा पुरानी है. वर्ष 1967 में आया राम-गया राम का दल-बदल का जो क्रम चालू हुआ, परिणाम स्वरूप सविंद (संयुक्त विधायक दल) की सरकारें बनी, टूटी. लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह एक नई और चिंताजनक रूप धारण कर चुकी है.

सत्ता पर आरूढ़ होकर "मजबूत" होने के बावजूद विधायकों को पांच सितारा होटलों में शिफ्ट करने के लिए "मजबूर" कर दिया जाता है. ताकि वे "बैरेकेडिंग" में रहें, बाहर की दुनिया से कटे रहें और कोई "चालबाजी" न कर सके. यह "संस्कृति" दल-बदल विरोधी कानून की "काट" बन चुकी है, जहां कानून के प्रावधानों को "चकमा" देकर "सत्ता बचाई" जाती है.

एक ताजा और स्पष्ट उदाहरण मुंबई महानगरपालिका चुनाव का है. "शिवसेना" के 29 पार्षद चुनाव जीते. इनके नेता, पार्टी के अध्यक्ष एवं महाराष्ट्र सरकार में उपमुख्यमंत्री पद पर आसीन हैं और "सत्ता के डंडे का पूरा सुरक्षा कवच" लिए हुए हैं. बावजूद इसके, विपक्ष से डरने की बजाय अपने ही गठबंधन के सहयोगी (या अतिरिक्त दबाव) से डरकर इन पार्षदों को मुंबई के बांद्रा स्थित पांच सितारा होटल (ताज लैंड्स एंड) में शिफ्ट कर दिया गया. यहां वे "रिफ्रेश" होने के नाम पर, वास्तव में निगरानी और सुरक्षा के घेरे में रखे गए. वर्तमान में सत्ता तो समस्त कार्यों पर आंच न आने देने वाली 'दाल' बन चुकी है. बावजूद इसके सत्ता पर बैठे नेता को होटल संस्कृति अपनाया पड़े? यह कैसा लोकतंत्र है, जहां "लोक" (जनता) की जगह "तंत्र" (सत्ता का खेल) हावी हो जाता है? जन प्रतिनिधि जनता के विश्वास पर चुने जाते हैं, लेकिन "अपने नेता के विश्वास" को जीतने के लिए होटल की चारदीवारी में कैद होना पड़ जाता है.

माँ नर्मदा-जिनके दर्शन मात्र से व्यक्ति का कल्याण होता है

डॉ. विनोद मिश्रा कुलगुरु लोधी विश्वविद्यालय

नर्मदा के महत्व को प्रतिपादित करते हुये ऋषि मार्कण्डेय ने कहा कि देवि समस्त ऋषि, देवताओं एवं महार्षियों की ओर से आओ नमस्कार. आपने समस्त परस्पर जगत समेत मृत्युलोक को पवित्र एवं पुष्पमय कर दिया है. जल के रूप में प्राप्त हुई नर्मदा जी, भगवान महादेव की सर्वोत्तम चामुण्डा है. मेकल पर्वत से प्राप्त होने के कारण आप मेकलसुता (कन्या) कहलाई. माँ आपको बारम्बार नमस्कार है.

ऋषि अग्रस्त्य ने माँ की महिमा को प्रतिपादित करते हुये कहा कि एकमात्र माँ नर्मदा देवी पुण्यमयी एवं शुभ है. जब्बुदौप एक लाख योजन बतलाया गया है. इसमें जितने भी चराचर प्राणी हैं. वे नर्मदा का जल पीकर शिवलोक की जाते है.

माँ नर्मदा के मूल्य को प्रतिपादित करते हुये कहा गया है कि इस युग में सभी समुद्र और नदियाँ सूख चुकी हैं. सत्ता कर्तव्य के अंत में नर्मदा का विनाश नहीं हुआ.

अर्थात् - जब प्रलयकाल को समस्त सागर एवं सरितायं क्षीण होकर नष्ट हो गईं. तब साल कल्पतम में रवा आप शास्वत बनीं हैं. इसलिये आपका नाम नर्मदा पड़ा है. माँ नर्मदा का प्रारंभ्य माघ शुक्ल सप्तमी, अश्विन नक्षत्र, दिन रविवार को मकर राशिगत सूर्य रहते हुये मध्याह्न काल में इस पृथ्वी पर हुआ.

माँ नर्मदा के संबंध में कहा गया है कि सरस्वती में 3 दिन तक, यमुना में 7 दिन तक गंगा में एक दिन स्नान करने से जो पुण्य लाभ मिलता है. वह पुण्य लाभ माँ नर्मदा के मात्र दर्शन मात्र से हो जाता है.

एक अन्य श्लोक में माँ नर्मदा के महत्व को विशिष्ट रूप से परिभाषित किया गया है कि गंगा कनखले पुण्य प्राच्या पुण्य सरस्वती.

यहां गोदावरी है, पुण्य है, और हर जगह नर्मदा है. अर्थात् - गंगा हरिद्वार में पुण्य देने वाली, परिचय में माँ सरस्वती जी. दक्षिण में गोदावरी पुण्यमयी है तो माँ नर्मदा समस्त स्थानों में पुण्यमयी एवं पूजनीय है.

माँ नर्मदा व्यक्ति को आनंद भी देती है तथा व्यक्ति के मद का (अहंकार) का शमन भी करती है. इसलिये इन्हें रेवा (नर्मदा) कहा जाता है.

एक बार महाराजा युधिष्ठिर ने मार्कण्डेय ऋषि से पूछा कि भगवन् . राजा पुरुवा से पहले महाराज हिरण्यतेजा ने कैसे माँ नर्मदा को पृथ्वी पर उतारा. तब मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि राजन चन्द्रवंश में एक अत्यन्त प्रतापी एवं तेजस्वी राजा हिरण्यतेजा थे. उनके राज्य में सभी प्रसन्न एवं सुखी थे. एक बार उनके राज्य में सूर्यग्रहण पड़ा. उन्होंने उस समय हजारों लाखों व्यक्तियों गाय, सुवर्ण, मणि समेत अन्न इत्यादि दान किया. लेकिन पितर इससे संतुष्ट नहीं हुये तो राजा ने पितरों से उनकी अप्रसन्नता पर प्रश्न

संदीप खेमसरा

ऊपर उठना होगा

धरती को जब देखा, तो इंसानी झगड़े, सीमाओं की लड़ाई, विचारधाराओं की टकराहट बहुत छोटी प्रतीत होती है. उन्होंने कहा, विज्ञान व खोज सिर्फ तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि नैतिक और बौद्धिक अभ्यास भी है, जो यह सोचने की क्षमता देता है कि हम सीमाओं से परे जाकर कैसे एक साथ रह सकते हैं. निश्चित ही, जब तक मानव लिप्त रहेगा और विषयों से दूरी नहीं बनाएगा, तब तक दृष्टि का विस्तार उपस्थित नहीं होगा. अपने

कालखंड में प्रवेश कर चुका है. इन सबके बीच, वैयक्तिक शांति और आनंद के भाव को बचाए रख पाना, सबसे बड़ी चुनौती है. भारतीय दर्शन ने आध्यात्म का मार्ग दिया. यह, संसार को एक दूरी और एक ऊंचाई से देखने का ही प्रशस्तिकरण है. संसार को एक साथ बदलना संभव नहीं है. व्यक्तिगत रूप से ऊपर उठने के ही प्रयास जारी रखने होंगे. वैयक्तिक सुख और शांति को प्राथमिकता बनाना होगा. ऊंचाई का जो स्तर इससे हासिल होगा, उससे प्रेरित होकर एकलक पैदा हो जाए तो संभवतया विश्व का कल्याण संभव होगा.

विशेष मायेन नहीं रखते. यह आत्मा को पहचाने, अहंकार को त्यागे और परमात्मा (उच्च शक्ति) के प्रति पूर्ण एकात्म की स्थापना की स्थिति है. इस अवस्था में शांति, आनंद, निस्वार्थ प्रेम, करुणा और आत्मानुभूति मुख्य होती है. आध्यात्म, मैं और मेरा को भावना से मुक्त होकर परम शक्ति से साक्षात्कार करने की यात्रा है. यह यात्रा भी वही है, जिसमें व्यक्ति सांसारिक और भौतिक स्तरों से ऊपर उठ जाता है. और जैसे जैसे व्यक्ति उच्चगामी यात्रा में प्रविष्ट होता है, संसार की यह द्वेषपूर्ण लड़ाइयां और वैचारिक मतभेद तुच्छ मालूम पड़ते हैं. संसार को एक साथ बदलना संभव नहीं है. व्यक्तिगत रूप से ऊपर उठने के ही प्रयास जारी रखने होंगे. वैयक्तिक सुख और शांति को प्राथमिकता बनाना होगा. ऊंचाई का जो स्तर इससे हासिल होगा, उससे प्रेरित होकर एकलक पैदा हो जाए तो संभवतया विश्व का कल्याण संभव होगा.